

तरजीहुल ईमान

हाफ़िज़ो क़ारी मुहम्मद अनीस चन्दौसवी

बेहतरीन आ़माल कौनसे हैं?

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कौनसा अ़मल बेहतर है फ़रमाया अल्लाह और रसूल पर ईमान लाना दरयाफ़्त किया गया फिर? अल्लाह की राह में जिहाद करना फिर? फ़रमाया हज्जे मबरूर (हज्जे मक़बूल)

(सहीहुल बुख़ारी जि.1 किताबुल ईमान स.108)

ईमान की तारीफ़

ईमान के लुग़वी मअ़ना किसी बात को सच मानने के हैं।

(नुजहतुल क़ारी शरह सहीहुल बुखारी जि.1 स.236)

ईमान का दूसरा लुग़वी मअ़ना है अम्न देना चूंकि (इसलिए कि) मौमिन अच्छे अक़ीदे इख़्तियार करके अपने आप को हमेशा के अज़ाब से अम्न दे लेता है इस लिये अच्छे अक़ीदों के इख़्तियार करने का नाम ईमान है।

(तफसीर नईमी पारह 1 अल बक़रा : 3)

ईमान उसे कहते हैं कि सच्चे दिल से उन सब बातों की तसदीक़ (सच होने की ताईद) करे जो जरूरियाते दीन से हैं।(बहारे शरीअ़त हिस्सा 1 स.172)

मज़ारों को सजदा करने का बयान

मेरे अजीज़ो : शरीअ़ते मुहम्मदी में अल्लाह के सिवा किसी को सजदा नहीं है जो लोग मज़ारों को सजदा करते हैं वो बहुत बड़े गुनाहगार हैं और नारे जहन्नम के हक़दार हैं क्योंकि जो बुर्जुगों को ताज़ीम के लिये सजदा करे तो यह शिर्क तो नहीं है लेकिन यह ना जाइज़ो हराम है- हज़रत अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ़ज़मी रहमतुल्लाहि अ़लैह लिखते हैं कि हाँ अलबत्ता जो जाहिल लोग क़ब्रों को सजदा करते हैं अगर वो लोग इन बुर्जुगों को क़ाबिले इबादत समझ कर सजदा करें तो यह खुला हुआ शिर्क है।
(जहन्नम के ख़तरात स.25)

सुन्नियों को क़ब्र पूजने वाला कहना

सुन्नी सहीहुल अक़ीदा को बिला वजह मुशिरक कहना खुद को शिर्क व कुफ़् में मुब्तिला होना है इसलिये कि सुन्नी क़ब्र को पूजता नहीं है बल्कि उसकी ज़्यारत करता है -और क़ब्रों की ज़्यारत का हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वल्लम ने खुद हुक्म फ़रमाया है जैसा कि मुसलिम शरीफ़ में हज़रत बरीदा रज़यल्लाहु अ़न्हु से हदीस मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैंने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़्यारत से मनअ़ किया था (लेकिन अब में तुम्हें इजाज़त देता हूँ)उनकी ज़्यारत करो

मग़फ़िरत की उम्मीद पर गुनाह करना

मेरे अज़ीज़ो : बेशक शिर्क व कुफ़्र के अ़लावा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जिस गुनाह को चाहे बख़्श सकता है मगर इस इम्कान की उम्मीद पर गुनाह करना यह तो बहुत ख़तरनाक है क्योंकि कभी कभी गुनाहों के सबब इन्सान का ईमान भी छीन लिया जाता है- हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैह फ़रमाते हैं कि गुनाह से इब्तिदाअन क़सावते क़ल्बी (दिल की सख़्ती)पैदा होती है फिर रफ़्ता रफ़्ता इन्सान कुफ़्र व गुमराही तक जा पहुँचता है-क्या तुम्हें इबलीस और बलअ़म बिन बाऊरा का वाक़िआ़ याद नहीं? उनसे इब्तिदा में एक ही गुनाह सादिर हुआ मगर वो बाद में कुफ़्र व गुमराही तक पहुँच गये और हमेशा के लिये तबाह हाल लोगों में शामिल हो गये।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन स.43)

दिल की सियाही

ज़ाफ़र बिन बुरक़ान रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत मेमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अ़लैह को यह फ़रमाते सुना :बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में एक सियाह (काला) नुक़ता लग जाता है, अगर तौबा करले तो उसके दिल से मिटा दिया जाता है, और बन्दा ए मौमिन का दिल आईने के मिस्ल साफ़ो

सल्बे ईमान के ख़ौफ़ से सारी रात रोते रहे

हमें यूसुफ़ बिन असबात से यह बात पहुँची है कि एक दफ़आ़ आप हज़रत सुफ़यान सोरी रहमतुल्लाहि अ़लैह के पास तशरीफ़ ले गये युसूफ़ इब्ने असबात फ़रमाते है कि मैंने देखा कि हज़रत सुफ़यान सोरी रहमतुल्लाहि अ़लैह सारी रात रोते रहे मैंने दरयाफ़्त किया क्या आप अपने गुनाहों के ख़ौफ़ से रोते हैं तो हज़रत सुफ़यान सोरी ने एक तिनका उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो अल्लाह की बारगाह में इससे भी कम हैसियत रखते हैं मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि अल्लाह दौलते ईमान न छीन ले।
(मिन्हाजुल आ़बिदीन स.266)

हज़रत सुहैल रहमतुल्लाहि अ़लैह का क़ौल मुबारक है कि आ़म मुरीद को ख़ौफ़ में मुब्तिला होने का डर होता है और आ़रिफ़ीन कुफ्र में मुब्तिला होने के ख़ौफ़ में मुब्तिला होते हैं।
(अहयाउल उलूम जि.4 स.326)

मेरे अज़ीज़ो : जब इन अल्लाह वालों को ईमान के छिन जाने का इतना ख़ौफ़ है तो हम गुनाहगारों को उनसे कहीं ज़्यादा सल्बे ईमान का ख़ौफ़ होना चाहिये।